मनुष्य बना

वा० मू०
१२.००

प्रेरणा गति, शुभ संकल्प,

क्षमा, प्रेम,

निष्काम कर्म, ब्रह्मचर्य पालन,

25 8 83

संरक्षक
दयाल फकीर चन्द जी महाराज
मानवता मन्दिर होशियारपुर (पंजाब)

'मनुष्य बनो' के नियम

१—शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिकता के नियमों का वास्तविक दृष्टि-कोण से प्रचार करना और प्रेम,सभ्यता,आदर, शिष्टाचार,सदाचार सहनशीलता और संयम की शिक्षा देना इसका मुख्य उद्देश्य है। मनुष्य बनना और बनाना

२—सन्त महात्माओं और ऋषियों की वाणी को सरल,सुबोध और साधारण भाषा में प्रचार करना।

३—सामाजिक उन्नति कारक तथा देशहित कारक लेखों को भी स्थान दिया जायेगा।

४—किसी धर्म पंथ या सम्प्रदाय के खण्डन सम्बन्धी लेख नहीं छापे जायेंगे।

५—यह पत्र प्रत्येक मास की १५ तारीख को प्रकाशित हुआ करेगा

६—लेखों के घटाने बढ़ाने और छापने न छापने का अधिकार सम्पादक को होगा। लेख सम्पादक के नाम भेजे जाँय।

७—ग्राहकों को पत्र लिखते समय ग्राहक नम्बर व पता साफ-साफ अवश्य लिखना चाहिये। उत्तर के लिये जवाबी कार्ड आना चाहिये वी० पी० पी० से पत्रिका नहीं भेजी जायगी। इसका वार्षिक मूल्य १५-०० है।

८—यदि किसी मास का पत्र ठीक समय पर न पहुँचे तो पहले अपने यहाँ डाकखाने से पूछताछ करके वहाँ से जो उत्तर मिले व अगला अंक निकलने से एक सप्ताह पूर्व तक कार्यालय में पहुंचने पर ही दूसरी प्रति बिना मूल्य भेजी जा सकेगी।

९—प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र, ग्राहक होने की सूचना, मनीआर्डर आदि मैनेजर के नाम से भेजनी चाहिये। मनीआर्डर कूपन पर अपना पता साफ-साफ लिखना चाहिये। और पते की तबदीली भी।

—प्रकाशक

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

R. S.

ओ३म पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥

मनुष्य बनो

वर्ष ३७ | अगस्त १९८८ | अङ्क ११

चेतावनी

प्रेम की डगर दिखा दो जी, मुझे प्रेम की डगर दिखादो जी।
हां जी प्रेम की डगर बतादो जी ॥ टेक
रैन अँधेरी पंथ न सूझे, हाथ पकड़ के जतादो जी।
पीर विरह की कलेजे साले, पिया से मोय मिलादो जी ॥
भूख प्यास दुख अधिक सतावे अमृत धार पिलादो जी।
हाय-२ पिया किहि विधि पाऊं कोई जतन बतादो जी।
पिया का बोल सुहावन लागे, अनहद तूर बजादो जी
अँखियन नीर बहे जल धारा, विरह की आग लगादो जी ॥
आशा तृष्णा सब विधि मेंटो, धुर पद आके लखादो जी।
जिया घबराय हिया अकुलावे जी की जलन मिटादो जी।
निसदिन तड़पूं निसदिन तरसूं, प्रेम नगर पहुंचादो जी।
फल मीठे मिलें दया से, बूंद अमी की पिलादो जी ॥
व्याकुल हो चहुं दिश में भटकूं, भूल भ्रम को घटा दो जी।
विरहिन देत संदेशा अपना, पिया को मेरे सुनादो जी ॥
घर की हुई न राह बाट की, हिया का कष्ट हटादो जी।
राधास्वामी चरण शरण बलिहारी, जग का जाल कटादो जी ॥

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

भूमिका

यदि मनुष्यों को स्त्री का संग न मिले तो इसमें शक नहीं कि वह पशु से भी गया गुजरा बन जाय। जो मनुष्य जीवन की प्रथम श्रेणी में हैं उनके लिये स्त्री का साथ अमृत के तुल्य है। माना कुछ आयु व्यतीत होने पर मनुष्य बिना स्त्री के भी रह सकता है। पर युवकों के दिल के लिये ईश्वर भक्ति के बाद यह ही एक प्रीति का संग है जो उनके मन को जीतकर सुमार्ग पर लगा सके। वास्तव में एक सुशील और सदाचार वाली रमणी उसको देवता बना सकती है। लोग कहते हैं कि स्त्री सारे दुखों की मूल है। पर याद रहे एकांत का जीवन और आयु पर्यन्त कुमार बना रहना सच्चे सुख और शांति का हेतु कभी नहीं बन सकता। माना एकांतसेवी अपना समय जप तप स्वाध्याय आदि में काट सकता है पर जो सुख एक जीवन में एक सच्चे मित्र से मिलता है, बाल बच्चों के जी बहलाव का साधन और बुढ़ापे में दुख दर्द का पूछने वाला, वह तो एक सदाचारिणी देवी के ही बांट की वस्तु है

जिस प्रकार एक थका हुआ पथिक बादलों में से निकलते हुए सूर्य को देखकर प्रसन्न हो जाता है, उसी तरह दिन भर मेहनत और कमाई करता हुआ पुरुष जब शाम को घर आता है, दिनभर काम करते करते एक तरह थका हुआ होता है। ज्योंही वह घर आया कि उसकी स्त्री जो दिनभर उसकी राह देखती रहती थी, मुस्कराती हुई शीघ्र ही उसके सुख के साधन जुटाने में लग जाती है। उधर बाल बच्चे हंसते खेलते उससे लिपट जाते हैं और वह उस समय अपनी दिनभर की थकान को भूलकर स्वर्गधाम का आनन्द लेता है। यह सुख सौभाग्य से किसी किसी को नसीब होता है। यदि कहीं इसके विपरीत किसी कुलटा और बुरे स्वभाव

की स्त्री से पाला पड़ जाय तो फिर उसकी दशा दयनीय भी हो जाती है। स्त्रियों का धर्म है कि वह अपनी जादूभरी मुस्कराहट से पति के दुख क्लेशों को हरती रहें, क्योंकि इस जगत मे पुरुषों को अक्सर जीवन में कभी कभी संकट भी आते रहते हैं। यदि स्त्री सुशील और धर्मपरायण है तो सब आपत्ति विपत्ति सहज में खुशी के साथ कट जाती है और एक सदाचारिणी घर को स्वर्गधाम बना देती है। जिसे देखकर उसके पति का दिल वैसे ही खिल जाता है जैसे कमल का फूल सूर्य को देखकर खिल जाता है। जिसको नेक स्त्री मिल गई वह ऐसा सुख भोगने में राजे महाराजों से बड़भागी है।

नेक स्त्री ईश्वर की देन है

ईश्वर ने सबसे श्रेष्ठ देन और अमूल्य रत्न जो मनुष्य को प्रदान किया है वह इसकी धर्मपरायण स्त्री है। यह वह देवी है जो उसकी सच्ची रक्षक है। यह वह मंत्री है जो इसको भला व बुरा जताती रहती है। यह वह हीरा है जिसकी चमक उसकी गुलाबी मुस्कराहट है। यह वह चन्द्रमा है जिस प्रकाश से घर जगमगाता रहता है। स्त्री की निष्काम सेवा इसका भोलापन उसकी प्रेम और जादूभरी प्यार की दृष्टि, उसकी सच्ची मनोहर और मोहनी बातें! ओह! यह सब तो ऐसे रत्न हैं जिनका मूल्य कोई चुका नहीं सकता। इसके परिश्रम से घर में खुशहाली और किफायतशारी से घर चेत जाता है। गुलाब की पखड़ियों के समान चटखते हुए इसके होंट सच्चे और स्पष्ट सहयोग के खजाने की कुंजी है। वह इस धरातल को स्वर्गधाम का नमूना बना देती है। पति इसकी मीठी और मधुर बातों को सुनकर अपना सब दुख भूल जाता है और किसी कष्ट और संकट के समय ईश्वर भी ऐसी पतिव्रत पालन करने वाली देवियों की

स्वभाविक प्रार्थना को तत्काल सुनता है जिससे घर में सब सुखी होजाते हैं।

जब तुम पर कोई मुसीबत आ पड़े फौरन अपनी स्त्री से बिना संकोच के कह दो। यह न समझो वह नादान और कम समझ है। कभी नहीं! स्त्रियों का दिल दिमाग कुदरती तौर पर मरदों से कहीं अधिक उन्नति शील होता है। तुम नहीं देखते कुमारी युवतियाँ अपनी सास के घर जाते ही किस प्रकार से दूसरे घर पर अपनी युक्ति और चतुराई से सबके दिल मुट्ठी में कर लेती हैं। स्त्रीयों की चित शक्ति पुरुषों से कहीं बढी चढ़ी होती हैं। मर्द हजार पढ़ा लिखा हो समय पर वह भी चूक जाता है पर स्त्री वह अचूक शास्त्र है जो वक्त पड़े पर काम अवश्य देती है। इस बात की पुष्टि तुम अपनी बहिन माता स्त्री आदि से समय पड़ने पर सलाह लेकर कर सकते हो। स्त्री पुरुष का आधा अंग यानी अर्धांगिनी कहलाती है। बिना इसके पुरुष किसी काम का नहीं है। स्त्री घर की महारानी और पुरुष की सच्ची मन्त्री है! बेचारी स्त्रियां तो जरा २ सी बात तक पुरुषों से कह देती हैं पर कितने खेद का विषय है कि पुरुष इस सम्बन्ध में गुमराह हो रहे हैं। जहाँ और जिस घर में दुराव रहता है वहाँ से सुख और चैन दूर भाग जाते हैं और कलह और क्लेश का सामना करना पड़ता है। और सहयोग संसार में अमूल्य वस्तु है। ससारी व्यव-हार में कुँआरे लोग कम सफल होते हैं। इसी कारण शादी करना जरूरी अंग है। क्या इतिहास इस बात का साक्षी नहीं है कि जो काम पुरुष नहीं कर सके उसको स्त्रियों ने चुटकी बजाते किस प्रकार सरल बना दिया। यदि यह मजूर है कि घर स्वर्गधाम बन जाय तो स्त्री पुरुष प्रेम व प्यार से रहें, स्त्रियों का विश्वास और आदरमान करें, तो फिर देखें कोई शिकायत का अवसर रह जाता है।

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

अपनी माता का सनमान व आदर करो

जिसकी माता जीवित है वह सचमुच बड़ा भाग्यशाली है क्योंकि जिस दुग्ध ने प्रेम व हमदर्दी के स्रोत को बहा कर तेरा लालन पालन किया था वह जीते जी सूख नहीं गया है। शास्त्र कहते हैं माता का दायत्व (हक) पिता और आचार्य से भी बढ़कर है। यह क्यों ? क्योंकि जिसके कारण तेरा अस्तित्व है, वजूद बना है, वह माँ का है और माँ ने जिस प्रकार तेरी परवरिश और देख भाल की है वह सर्व श्रेष्ठ निष्काम सेवा थी।

हम जानते हैं कि तू बुद्धिमान और तजुर्बेकार है। अपनी माता से कभी कभी सम्मति ले लिया कर। यथा सम्भव कभी कभी उसके कष्ट सहन का बदला चुकाने का यत्न किया कर। तेरे थोड़े से ही भाव प्रगट करने से उसका दिल बल्लियों उछलने लगेगा। और उसके मन का, आत्मा. गुप्त आकर्षक आशीर्वाद तुझको खुश और चैन से रहने में जादू का असर दिखावेगा।

उसकी राय का आदर कर. यह कभी मत ख्याल कर वह बूढ़ी बावली है। तेरे कालिज की शिक्षा, वर्तमान समय का तजुर्बा, वह सब उसके प्रेम के व्यवहार और अभ्यास के आगे तुच्छ और अपूर्ण ठहरेंगे। क्योंकि इसमें असलीयत रहती है और वह ज्यादा तर झूठे हैं बनावटी हैं।

माता के धार्मिक विश्वास की निन्दा न कर न उसकी हंसी उड़ा। माना तेरे विचार विशाल हैं उसकी धर्म निष्ठा में तंग ख्याली है। पर तू कभी इस खास विषय में उसको दुखी मत कर।

जब कभी सम्भव हो अपनी युवक मित्र मंडली और प्यारों को उसके पास लाया कर और अपने सब दुख सुख और खेल कूद के कामों में उसकी सलाह ले लिया कर जिससे उसको अपने बुढ़ापे में तेरी जवानी की उमंगों का सुख मिल जाया करे। यदि कभी प्रेम के भाव में आकर वह तेरी पीठ पर हाथ फेरे तो खुशी

से तू उसके आगे एक छोटे बालक के समान उसकी गोद में खेलता हुआ जान । माता की दृष्टि में एक ज्यादा उम्र का भी बच्चे के समान है ।

यदि तू अभी बालक है तो अपनी पुस्तक कलम बुद्दिका इत्यादि सब उसको दिखलाया कर अपना सवक भी सुनाया कर । इससे उसकी आत्मा को महान सुख मिलता है ।

यदि तू युवक हो गया है और माँ बूढ़ी है तो यह कभी न समझ कि वह बेकाम होगई । अपनी स्त्री और बच्चों को साथ लेकर प्रातः ही सब उसके पैर छुआ कर, उसको प्रणाम किया कर, और जो वह आर्शीर्वाद दे उसको एक अमूल्य ईश्वर की देन जान । आज के समय में आर्शीर्वाद के महत्व को न जानने का ही फल है जो हमारे दुख और सकटों की मात्रा दिन प्रतिदिन बढ़ रही है ।

जो युवक इस प्रकार माता का आर्शीर्वाद लेता रहता है उसकी सब ससारी कामनायें सफल होती हैं । लोगों की दृष्टि मे आदर मान व प्रतिष्ठा प्राप्त करता है और लोक परलोक के यश का भागी बनता है ।

जो लोग माता की ऐसी मान प्रतिष्ठा करते हैं हम उनको आदर की दृष्टि से देखते हैं क्योंकि वह संसार मे सबसे अधिक सुखी भाग्यशाली और सबसे अधिक सदाचारी हैं ।

स्त्रियों को शिक्षा चाहे जैसी उच्चकोटि की क्यों न दीजाय । जब तक इनको घरेलू जीवन के इन्तजाम की लियाकत नहीं है । इनकी शिक्षा पूर्ण न होगी न पूर्ण समझी जायगी । माना राज्य-काज के कामों में अधिक उच्छशिक्षा की जरूरत है पर घरेलू कामों के लिये भी यह सब गुण जरूरी हैं । जैसे एक सिपाही को उन्नति करते करते एक बड़े अफसर बनने पर उसको निचली सब जगहों का तजुर्बा होता है उसी तरह स्त्रियों को भी हर घरेलू

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

॥ मनुष्य बनो ॥

काम में दक्ष होने की जरूरत है । जब ही अपने बावर्चियों,
नौकरों और खानसामाओं से काम लेने में सुभीत रह सकता
है । अनाड़ियों की भाँति बने रहने से शासन भले प्रकार नहीं
कर सकती ।

आज समय के लिये पढ़े बाबू लोग हिन्दुओं की प्राचीन
सभ्यता की हँसी ऐसी उडाते हैं कि बस रे बस ! पर यह नहीं
देखते कि उनके जीवन के सब महकमे कैसे पूर्ण थे । खेद है वह
अब नष्ट हो रहे हैं । और कम लोगों की निगाह इनके गुणों की
ओर जाती है और फिर इनसे बचाव का सवाल तो पैदा ही
नहीं होता ।

आज समय के समान चाहे, कन्या महाविद्यालय उस समय
नहीं थे, पर फिर भी जरूरी शिक्षा खेल कूद में ही सिखाने
का नियम था जिसको हिन्दू लड़कियां गुड्डा गुड्डी के खेल मे
घर ही सीख लेती थीं । शादी, बरात, महमान्तरी, दहेज, दावत,
खाना, पकाना, काढ़ना, सीना पिरोना, लड़के का जन्म, पूजा-
पाठ, मृत्यु में शोक, इत्यादि सब कुछ इसी खेल के सिलसिले में
जान लेती थीं । और जब शादी के बाद अपने पति के घर जाती
थीं, वे ही खेल के अनुभव इनके वहाँ सहायक बनते थे' जिसके
फलस्वरूप वह अपने व्यवहार से सबको खुश और वश में कर
लेती थीं । क्या आज की नई रोशनी की शिक्षा का ऐसा प्रभाव
है ? सम्भव है हमारे इस कथन को नई रोशनी के युवक और
युवतियां घृणा और दोष दृष्टि से देखें । पर हम स्पष्ट रूप में
बिना कहे भी रह नहीं सकते कि हाल की शिक्षा प्रणाली इस
विषय में बुरी तरह से पिछड़ रही है और आगे भी ऐसे ही
चिन्ह नजर आते है क्योंकि हिन्दुओं में जितना पुरुष के रहन-
सहन का ढाँचा बदलता जायगा उसी मात्रा में हमारा हिन्दुत्व
जिसमें घरेलू जीवन की सच्ची शियां जो केवल हिन्दू घरों की

मीरास (उत्तरदायत्व) हैं भागती नजर आयेंगी।

शिक्षक हिन्दू समाज अपने बुद्धि विचार पर गर्व करता है। पर वास्तव में देखा जाय तो जाति की रक्षक स्त्रियां जो ऐसी योग्य होती थी कि वह अक्षरों का बोध भी न होते हुए सारे कर्मकांड से इतनी परिचित होती थीं कि एक पुस्तक भी बता सकती है।

शास्त्र और पुराणों के उदाहरण उनको अपनी माता, सखी सहेलियों की संगति से कठाग्र रहते थे। वह साक्षात पुस्तक रूप थीं। वक्त पड़े पर उनकी सम्मति ली जाती थी, वह जानती थी किस समय क्या करना चाहिये? अब हमारे भाव के समझने में कठिनाई न होगी। खेद है! अब यह प्राचीन हिंदू स्त्रियों की नस्ल का खात्मा हो रहा है। हम साहस पूर्वक कह सकते है कि जब तक इस नई शिक्षा प्रणाली में प्राचीन सभ्यता के गुणों और नियमों को शामिल न किया जायगा, याद रक्खो हमारी जाति को पछताना पड़ेगा।

सच्ची माता कैसी होती है?

एक नगर में दो स्त्रियां एक लड़के के लिये झगड़ रही थीं। मामला मजिस्ट्रेट की कचहरी में पहुँचा। दोनों ही अपना-२ हक लड़के पर इस तरह बयान करती थीं कि मजिस्ट्रेट सा० भी अपनी मजिस्ट्रेटी भूल गये। अन्त में हार कर उन्होंने अपनी घर वाली की इस मामले में राय ली। जो उस नगर के भाग में अपनी चतुराई को बहुत प्रसिद्ध थी। और अड़ोस पड़ोस में उसका बहुत मान था। उसने थोड़ी देर इस मामले पर विचार किया और कहा नौकर से बच्चे के बराबर के कद की एक मठरी मंगवा दीजिये। जो उसी समय मंगा दीगई। फिर बच्चे को अपने पास मंगा लिया। और उन दोनों स्त्रियों को

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

बाहर के कमरे में बुलवा लिया। मजिस्ट्रेटिन ने लड़के के कपड़े उतार कर मछली को पहना दिये और नौकर को आज्ञा दी कि दोनों स्त्रियों के सामने लड़के को दरिया में फेंक दे। नौकर ने आज्ञा का पालन किया। मछली पानी में फेंक दी गई। वह उसमें उछलने लगी। और कपड़े के कारण तड़फड़ाने लगी। इसका प्रभाव स्त्रियों पर क्या पड़ा? एक तो चुपचाप बैठी देखती रही, दूसरी चिल्ला कर निडर होकर पानी में कूद पड़ी जिससे बच्चे की जान बचे। मजिस्ट्रेट की पत्नि ने कहा देखो यह ही बच्चे की असली माँ है। उसको पानी से निकाला गया मजिस्ट्रेटनी की बड़ी तारीफ हुई। उसने बच्चे को अच्छे खूबसूरत वस्त्र और मिठाई देकर उसकी माता के हवाले किया जो दुआयें देती हुई अपने घर गई।

नेक पत्नी

वह मर्द अक्सर भूले हुये हैं जो अपनी स्त्री की कदर नहीं करते। उसकी प्रेम भरी बातों का अनादर करते हैं। स्त्री स्वाभाविक ही पुरुषों से अधिक चतुर, दूरदर्शी और प्रेम प्रगट करने वाली होती है। इसकी चतुराई को मर्द नहीं पहुंच सकता।

"स्त्री चरित्रम पुरुषष्य भाग्यम् देवो न जानी किता मनुष्यः" अथवा स्त्री के चरित्र और पुरुष के भाग्य को देव भी नहीं जानता तो मनुष्य की क्या हस्ती है?

सूक्ष्म बुद्धि और पवित्रता के साक्षात रूप! तू सचमुच संसार में पूजा और सम्मान के योग्य है! यदि तू न होती तो संसार के का क्या हाल होता? भय, अपवित्रता, पशुपन और व्यभिचार के दृश्य चारो ओर नजर आते! तू वास्तव में ऐसी देवी है जो समाज के चाल चलन और रीति रस्म में सहूलियत, मुलामियत, सुन्दरता और पवित्रता पैदा करती है। क्रोध में मनुष्य पशु बन जाता

है। पर जहाँ सुलक्षण स्त्री की जादू भरी प्रेम की दृष्टि उस पर पड़ी नहीं कि वह फौरन संभल बैठता है। मर्द लाख कहें कि औरतों की बात न मानें। स्त्री अपनी किसी न किसी युक्ति से उसको अपने आधीन बना कर उसको सद राह पर ले आवेगी। कौन सा मर्द है जिसको कभी मौका पड़ने पर अपनी स्त्री की चतुराई देखकर झेंपना न पड़ा हो! कोई माने या न माने जो जो अच्छी घटना यहां पर कभी कभी घटती हैं। उनमें अधिकांश स्त्रियों की सम्मति का ही प्रणाम है। कभी माता के रूप में बच्चों के दिमाग में आगामी मान बडाई के बीज बोती है। कभी बहन बनकर भाई को वीर और उत्साही बनने का संचार करती है। पत्नि के रूप में घर को स्वर्ग धाम बनाती हुई पति को धर्म मार्ग पर कायम रखना इसी देवी का काम है। और फिर पुत्री के रूप में अपनी सादगी और तोतली जुबान से किस कदर माता पिता को मुग्ध करती है। कुंआरे मर्दों का देखो वह जन्म भर दुखी रहते हुये जान देते हैं। स्त्रियों के नेत्र बड़े तेज, चित्त उदार, और दिमाग बड़ा विवेक विचार वाला होता है। चालाक से चालाक मर्द भी स्त्री की तेज समझ पर विजयी नहीं हो सकता। जो मर्द अपनी नेक स्त्री से सम्मति लेकर काम करेगा वह कभी दरिद्रता का शिकार न बनेगा। इसलिये हमारा फर्ज है कि इस सम्बन्ध में हम विचार से काम लेना सीखें जिससे हमारा लोक व परलोक दोनों का सुधार हो?

मालिक सद्बुद्धि दे कि हम सद्मार्ग को ग्रहण करें।

"शिव"

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY PURNADAYAL

बनदेवी

कबीर मर मर पच रहा कोई न बूझे सार।
वह तो हरि का दास है मौत रही थक हार ।।
दुख कलेश और आपदा राम कसौटी जान।
धीरज दृढ़ता राम की को मारे बलवान ।।
काच न अग्नि ताड़ये रंग रूप होय भंग।
साधू कंचन ताइये चढ़े सवाया रंग।
मैं पतिव्रता पीउ की कबहु न होय अकाज।
पतिव्रता नांगी रहे तो वाही पति को लाज ।।
शून्य सनेही पाईया तहाँ मरजीवा मन।
कबीर चुन चुन ले गया भीतर राम रतन ।।

धारा नगरी का उद्यादित्य नामी एक राजा गुजरा है। बनदेवी उसकी पुत्री थी और यह स्त्री बड़ी सुन्दर धर्मात्मा और धैर्यवान थी। धर्मपरायण रह कर सदा सत मार्ग पर चलती थी। इसकी माता का नाम मनोहरी देवी था। इसने बनदेवी का पालन पोषण किया था। बनदेवी पढ़ी लिखी नहीं थी। पर जो पढने लिखने का प्रयोजन है उसमें कूट कूट कर भरा था। जब लड़की सयानी हुई पिता को इसके विवाह की चिंता हुई। देश देश के राजाओं के संदेश आये। पर उद्यादित्य ने किसी को स्वीकृत नहीं दी। अन्त में कल्याण नगर का राजा इनकी दृष्टि में योग्य मालूम हुआ क्योंकि वह वीर, सुशील, विख्यात, नीतिवान, साहसी और दयालू था। सब उसकी प्रशंसा करते थे। इस कारण उद्यादित्य ने उसको बुलाकर उसके साथ विवाह कर दिया और कहा मैं तुमको ऐसा अमूल्य रत्न देता हूँ जो कि किसी राजा के कोष में कठनाई से निकलेगा—तुम इनकी इज्जत करना और ईश्वर

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

तुम्हारा भला करेगा। सूरज सिंह ने शीश नवाकर कृतज्ञता प्रगट की। और बनदेवी को ब्याह कर अपने घर लेगया। वहां आकर वह सचमुच कीमती जवाहर साबित हुई। सूरजसिंह उसके गुण और स्वभाव को देखकर मोहित रहता था। और उसका इतना मान और आदर करता था। कि उसकी सम्मति के बिना राज काज का कोई काम न करता था। रानी की कोख से दो पुत्र चन्द्रसिंह और विजयसिंह पैदा हुये जो अपने माता पिता के समान नेक और सुशील थे। राजा रानी दोनों खुश थे। देश आबाद था। प्रजा सुखी थी। दोनों पुत्र होनहार दीखते थे। उनके सांसरिक सुख में किसी बात की कमी न थी।

पर दुनिया की दशा एक समान नहीं रहती। कभी सुबह है कभी शाम है। जीवन का यह अंजाम है। कभी रात है कभी दिन है। दुख और सुख सब पर आते हैं। रामचन्द्रजी महाराज ऐसे मर्यादा पुरुषोत्तम और महाराज युधिष्ठिर ऐसे धर्मराज भी इससे न बच सके थे। राजा चतुसिंह ने धारानगर पर चढ़ाई करदी। सूरजसिंह दिल खोलकर लड़ा। पर समय विपरीत था। सेना काम आई। और इसको अपनी रानी और दोनों पुत्रों को साथ लेकर भाग कर जान बचानी पड़ी। देखो समय का फेर! कहां एक देश का राजा और कहां यह दशा कि सेवा के लिये एक आदमी भी साथ नहीं! रानी जिसने बड़ी मान और प्रतिष्ठा में परवरिश पाई थी, जिसकी सेवा के लिये सैकड़ों बांदियां हाथ बांधे खड़ी रहती थीं वह आज जंगल जंगल में पैर घसीटते मारी फिर रही है। एक पुत्र पिता के कन्धे पर और दूसरा माता की गोद में था। बन और उपवनों में घूमते फिरते चले जा रहे थे। कभी पैरों में कांटे चुभ जाते थे, कभी भूख प्यास सताती। रास्ते की थकान रानी को ज्वर हो जाता। कभी कभी वह दुख

से रो भी पड़ती ! पर विवश ! जान बचाना भी जरूरी था । वह इस प्रकार पैदल चलते हुये दिल्ली पहुँचे । और एक धर्मशाला में आकर ठहर गये । क्योंकि मकान किराये पर लेकर ठहरने को पैसा कौड़ी पास न था । दिल्ली आने को तो आगये पर चाण्डाल पेट नहीं मानता था । किसी न किसी उद्यम का तलाश करना जरूरी था । भीख माँगी नहीं जा सकती थी । अन्त में दोनों ने यह सलाह की कि लड़के तो दोनों किसी की गाय भैंस चरायें और वह दोनों जंगल से लकड़ी लाकर बेचें । जिससे रोज के खर्च का गुजारा चले । राजा शरीर का पुष्ट था वह हाथ में कुल्हाड़ी लेकर लकड़ी काटता, एक बोझ तो रानी के सिर पर रख देता और दूसरा खुद उठा लाता और दोनों शहर में बेच लेते ।

एक दिन रानी जंगल से पहले चली आई । वह अकेली थी । शहर के दरवाजे पर किसी सौदागर ने डेरा गाढ़ रक्खा था । वह लकड़ी बेचने की नीयत से उस ओर जा निकली । उसकी आवाज बड़ी मधुर थी । सौदागर ने उसकी आवाज सुनी । सोचने लगा जिसकी आवाज इतनी अच्छी है वह खुद कैसी सुन्दर होगी । उसने रानी को बुला भेजा । नौकरों ने कहा चल सेठ तुमको अच्छे दाम देगा । वह लोभ के वश डेरे के पास चली गई । सौदागर का विचार ठीक निकला । उसका मुख चन्द्रमा की भाँति चमक रहा था । दुनिया में ऐसी स्त्री उसकी दृष्टि में नहीं गुजरी थी ।

करके महनत मजदूरी का काम करती है। । यह शब्द सुनकर रानी का जी भर आया । कहने लगी महाराज ! मैं दुख की सताई हुई हूँ। मेरा हाल कुछ न पूछो। हम लोग इसी प्रकार विपत्ति और दुख में दिन काट रहे हैं। पहले जन्म में न ईश्वर भक्ति की थी न शुभ कर्म किये थे । इस कारण दुख भोग रहे हैं। कर्म पर किसी का वस नहीं । जो जैसा कर्म करता है वैसा फल पाता है । आप लकड़ियों का मोल भाव कीजिये मुझ दुखिया का नाम ग्राम पूछने की क्या जरूरत है ? साहूकार ने उसके लबबहजे से समझ लिया कि वह जरूर किसी उच्च कुल की स्त्री है। उसने कहा अच्छा तू अपना नाम मत बता। पर यदि तू मेरे पास रहना पसंद करे तो तेरे कष्ट कलेश दूर हो जायेंगे। मैं रात दिन तेरी दिलजोई में रहूंगा। तुझ जैसी अबला को घुट घुट कर मरना उचित नहीं। बनदेवी समझ गई। इसके मन में पाप बस गया है । वह उलटे पांव वहां से चल दी । पर सौदागर ने उस समय उसको पकड़ लिया । और डेरा वगैर वहां से उखाड़ कर कूच कर दिया। और उसको भी रथ पर बिठा कर भाग निकला। बनदेवी डर के मारे ऐसी कांप रही थी जैसे कसाई को देखकर गाय कांपती है। वह रोती जाती थी। शोक से उसका मुख ऐसा सूख गया था जैसे बिना जल के नर्म पौधे कुम्हला जाते हैं वह अपने पति के प्रेम और पुत्रों के बिछोह को याद कर कर के बिलाप करती जाती थी। सौदागर ने उसको बड़े लोभ लालच दिखाये। दुनिया के भले बुरे की बातें समझाई, पर रानी ने कहा भाई मैं पतिव्रता स्त्री हूं। जान जाय तो जाये मैं धर्म नहीं त्यागूंगी । मुझे चाहे जान से मार दे पर ऐसे आशा रखना मत छोड़ । बहतर है तू मुझे मेरे पति के पास पहुँचादे। मैं पति से अलग रह कर संसार में जीवित

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

रहना नहीं चाहती । जिसने सदा अच्छे दार्थं खाये हैं वह भूख लगने पर विष कभी न खायगा । सिंह का भूखा बच्चा घास कभी न खायगा । तू मुझे मत सता ।

अग्नि में जलना भला, है विष का पान ।
त्याग शील का नहीं भला नहीं कछु शील समान ॥
गिरयो पपीहा सुरसरी लग्यो बधिक को बान ॥
मुख मूंदे सुरत गगन में निकस गये यों प्रान ॥

यदि तू दया न करेगा तो मैं अवश्य ही अपने प्राण त्याग दूंगी । पर सौदागर इसकी बात कब सुनने लगा था । वह काम के वश में था वह फिर तरह तरह के डर और लोभ लालच दिखाने लगा । रानी ने फिर ऊससे कुछ न कहा । उसने सोचा यह मेरी अब कोई बात न सुनेगा । इस लिये चुप हो रही । जब शाम हुई सौदागर ने एक जगह डेरा गाड़ने का हुक्म दिया । रानी को एक अलग डेरे में जगह दी गई । इसके पहरे पर चारों ओर स्त्रीयां तईनात की गई । खाने पीने का सामान पेश किया गया पर रानी ने दृष्टि उठाकर भी नहीं देखा ।

रात हो गई करीब करीब सब सो गये । इसने रोते हुये ईश्वर को याद किया हे दीना नाथ ! अब इस समय तेरे सिवाय कोई सहारा नहीं । न किसी की आस भरोस है । हे प्रभू ! मेरी लाज तेरे हाथ है । तू अपने दीन और दुखी बालकों की ऐसे समय में जरूर रक्षा करता है ! तू मेरी भी सुध ले !

सुरत करो मेरी सांईयां मैं हूं भव जल मांह ।
आपे ही बह जाऊंगी जो नहिं पकड़ो बांह ।
औसर बीता अल्प तन पीउ रहा परदेश ।
सुधि मेरी लीजो हे प्रभु ! काटो कष्ट कलेश ।

॥ मनुष्य बनो ॥

रानी ईश्वर की स्तुति करके खूब रोई। प्रार्थना करने से चित्त में कुछ ढाढस बंधी ! उसने आंसू पूंछे, सिर ऊँचा करके देखा ! सब बेखबरी की नींद में सो रहे थे। मौका अच्छा था। वह दबे पांव उठी और भाग कर जगल की ओर चली गई। जब वह दूर निकल गई तब जी को चैन आया। जान में जान आई। राम-राम कह कर पिशाच से पीछा छुटा। जहाँ आकर वह ठहरी थी वहाँ फाड़खाने वाले पशु बहुतायत से थे। यहाँ आकर उसने दम लिया। और एक वृक्ष के नीचे बैठकर फिर वह जोर-२ से विलाप करने लगी। इसके रोने और चिल्लाने की आवाज से सारा जंगल गूंज उठा। वह अपने पुत्रों का नाम ले ले कर चिल्लाती थी। पर वह कहाँ थे जो इसकी सुनते। रोते-२ बेहोश हो गई वृक्ष के नीचे पड़ रही। नींद आ गई और वह पृथ्वी पर पड़ गई। जब नींद खुली देखता क्या है ? दो लुटेरे पास खड़े हुए आपस में झगड़ रहे हैं। एक कहता था मैंने इसको पहले देखा है। इसलिये यह मेरी स्त्री होगी। दूसरा कहता था नहीं मैं तुझ से बड़ा हूं। इसलिये इस पर मेरा हक है। रानी घबराई ! हा परमात्मन् !

एक आफत से तो मर मर के हुआ था जीना।
पड़ गई कैसी ! मुसीबत यह मेरे प्रभु ! नई।

क्या करूँ ! किधर जाऊँ जमीं सख्त है। आसमान दूर है। वह तो इस चिंता में थी उधर दोनों में तलवार चलने लगी। अंत में जो बली था उसने दूसरे कमजोर को मार कर पृथ्वी पर डाल दिया। और आकर रानी का हाथ छुटा दिया। लुटेरे ने कहा देख मैंने तेरे लिये अपने साथी को मार डाला। अभी तलवार म्यान में नहीं गई। जो व्यक्ति अपने साथी को मार सकता है वह स्त्री की क्या परवाह करेगा। बहतर है तू मेरे साथ चल नहीं तो इसी खड्ग से तेरा भी काम तमाम कर दूंगा। रानी वीरांगना और साहसी थी, वह कहने लगी ! पापी तू मुझे क्या डरता है। ईश्वर की इच्छा के बिना तू मुझको क्या

मार सकता है ? यदि मेरी मृत्यु ही आगई है तो मैं तैयार हूं. तेरे साथ कभी न चलूंगी । जो कुछ तुझसे बने कर मैं तनिक भी तुझसे नहीं डरती न तेरा कहना मानूंगी । लुटेरे ने फिर उसको मुलायमी से समझाना चाहा पर उसने साफ इन्कार कर दिया । आखिर उसने क्रोध में आकर तलवार को फिर हाथ से उठा लिया और करीब था कि रानी के सिर को धड़ से अलग कर दे ! इतने में एक सनसनाता हुआ तीर उसकी छाती में लगा । लुटेरा तो वहीं का वहीं लोटपोट हो गया । तलवार पृथ्वी पर गिर पड़ी, रानी चकित होकर देखने लगी ! सामने से एक भील तीर कमान लिये हुये आया । बहिन ! तु आज से मेरी धर्म की बहिन है । तू कौन कहां जाती है । कहां से आई है ? वह तेरा कौन था । मैं तुझको कभी न सताऊंगा । तू मेरी मुंह बोली आज से बहिन है । जिससे तुझे सुख मिले वह तेरी सेवा करूंगा । और मेरी स्त्री भी तेरा सत्कार करेगी ।

भील की बातों से सहानुभूति टपकती थी । रानी ने उससे कुछ दुराव न किया । सारा हाल कह सुनाया । मैं समझ गया था कि यह आदमी पापी है तुझको दुख देना चाहता था । इस कारण जब मैंने इसकी धींगामुस्ती और तेरा इन्कार सुनाइसके मारने में ही भलाई देखी । मेरा झोंपड़ा पास ही है । देख वह नजर आ रही है । इस बन में तेरा कोई साथी और मददगार नहीं है । यदि तू मुझे अपना भाई समझती है और मेरे साथ रहने में कुछ संकोच नहीं है तो चल कुछ दिन हमारे संग जीवन बिता । मैं तेरे पति की भी खोज कर दूंगा ।

रानी ने रजामन्दी प्रगट की और खुशी के साथ भील के झोंपड़े में आकर रही । यहां दोनों स्त्री पुरुष बड़े प्रेम व आदर के साथ पेश आते थे । और हर प्रकार से उसकी तिलजोई करते थे ।

यह तो रानी का हाल रहा । अब राजा की मुसीबत की कहानी सुनिये ।

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

सूरजसिंह लकड़ी का गट्टा सिर पर धरे शहर में आया। रानी न मिली। दो घन्टे चार घन्टे इन्तजार किया मगर वह नहीं आई। वह एक तरफ दुखी था। दूसरी ओर दोनों लड़के माता के लिये बिलख रहे थे ! पिता जी ! माता कहाँ गई ? बेटे संतोष करो आती होगी, पर माता कहाँ थी ? जो वहाँ आती। दीन बालकों को रोता छोड़ कर शहर के सारे मोहल्ले छान डाले पर कहीं पता नहीं लगा। एक दिन दो दिन चार दिन धैर्य धरा। पर आखिर धैर्य की सीमा है। वह छोटे बालक माता के बिना कल नहीं लेते थे। जब वह रोने लग जाते तो घन्टों ही रोते रहते। सूरजसिंह उनकी बड़ी तसल्ली करता पर वह भी अपने आँसू नहीं रोक सकता था। मुसीबत ! आखिर तेरी भी हद होनी चाहिये। राजपाट गया, धन, मान प्रतिष्ठा सब गई लकड़ी बेचने की नौबत आई। फिर भी तुमको सब्र न आया।

चौथे दिन जब लड़के अति व्याकुल हुये सूरजसिंह का भी जी भर आया ! इसने दोनों को अपने कन्धों पर बिठा लिया और जंगल-२ गाँव गाँव बनदेवी का नाम पुकारता हुआ चल निकला। लोग इसको देख कर हंसी ठट्ठा करते थे कि यह कहीं पागल तो नहीं हो गया। बन-देवी का नाम भी कुछ भौंड़ासा था। किसी से कुछ पता न लगा और वह इस प्रकार कई दिन बच्चों को लादे हुए उसकी खोज में भटकता रहा। इस समय बालकों की आयु पांच छः वर्ष की रही होगी इनमें चन्द्र बड़ा और विषय छोटा था। दोनों जंगल में अपनी माता को पुकारते हुए चले जा रहे थे। जब कुछ उत्तर न मिलता वे निराश होकर रोने लग जाते। उस समय सूरजसिंह के जी का हाल कुछ न पूछो।

राह में एक गहरी नदी पड़ी जिसमें न थल न बेड़ा। कैसे पार करता ? अन्त में उसने लकड़ी काट कर एक बेड़ा बनाया। इस पर अपने दोनों बच्चों को सवार किया और आप भी बैठ गया। लोग सत्य

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

कहते हैं मुसीबत अकेली नहीं आती ! जब बेड़ा मंझधार में लगा वहां
जल की धार बड़ी तेज थी। बेड़ा संभल न सका, उलट गया। दोनों
लड़के गोता खाते हुये वह निकले। सूरजसिंह भी ज्यों त्यों करके डूबने
से बचा। बेचारा बड़ी कठिनता से तट पर आया। बच्चों का कहीं
पता नहीं था। न इनकी लाश ही मिली। राजा ने समझा वे दोनों
डूब गये। विवश होकर तब तकदीर वह जार-२ रोता हुआ आगे बढ़ा
राज गया ! पतिव्रता स्त्री से बिछोह हुआ ! दो लड़के जो आंखों के
तारे थे वह भी नदी के प्रवाह को भेंट हुये !

अब उसने देखा कि चिन्ता करना व्यर्थ है। आखिर जंगल में रहने
लगा और वह थोड़े आदमियों का जत्था बनाकर उसका सरदार बन
गया और जंगल की पैदावार पर जीवन निर्वाह करने लगा। दो तीन
वर्ष के भीतर उसका बल इतना बढ़ गया कि जब उसने सुना कि राम-
नगर का राजा मृत्यु को प्राप्त हुआ और उसके देश का कोई उत्तरा-
धिकारी नहीं है उसने अपने आदमियों को बुलाकर कहा भाईयो ! मैं
धारानगर का राजा था। भाग्य बिगड़ गया। अब तक मारा-२
फिरता रहा मैंने सुना है रामनगर का राजा मर गया है कोई उस
राजा का वारिस नहीं है, इस कारण मैं उस पर अधिकार करके
शासन करने का इरादा रखता हूं। कहो आप लोगों की क्या सम्मति
है ? सबने हाथ उठाकर इसका संग देने की साक्षी दी। राजा ने मुआ-
बदर जानकर शहर पर धावा बोल दिया। और आनन फानन में
नगर पर अधिकार जमा लिया। जब लोगों को मालूम हुआ कि यह
धारा नगर का राजा है वे चित्त में बड़े प्रसन्न हुये। सूरजसिंह नेक
और न्यायप्रिय भी था। थोड़े समय में ही वह रामनगर की प्रजा की
दृष्टि में सर्व प्रिय बन गया और भले प्रकार से राज-काज करने लगा।
पर स्त्री और पुत्र के बिछोह का दाह उसको बुरी तरह सताता था।
कई राजाओं ने उसको अपनी लड़कियां देनी चाहीं पर वह सदा
इन्कार करता रहा और किसी दिन भी उसके चित्त से वनदेवी क

ध्यान दूर नहीं हुआ। उसने जगह २ पर उसकी खोज में आदमी रवाने किये पर सदा असफल रहा।

चन्द्र और विषय भी डूबने से बच गये थे। केवल जल के प्रवाह में बह गये थे। ईश्वर ने उनके प्राणों की रक्षा की थी! एक को तो किसी मछुआ ने पकड़ लिया। दूसरा किसी लकड़हारे के हाथ लगा। दोनों का वहां पालन पोषण होने लगा। चाहे वह लकड़हारे और मल्लाह के घर रहते थे पर दोनों को सैर व शिकार का शौक था और क्षत्री वंश के सब गुण उनमें मौजूद थे। यह आसपास के देहात में ही रहते थे पर आपस में मिलने का कभी अवसर नहीं हुआ था।

सती बनदेवी भील के यहां रहती थी। चाहे वहां उसे किसी प्रकार का दुख नहीं था पर पुत्रों और पति के बिछोह से दुखी रहती थी। भील ने बहुतेरा तलाश किया पर पति और पुत्रों का कहीं पता न लगा। एक दिन का जिक्र है कि जब भील शिकार खेलने गया हुआ था और भीलनी निकट के खेत में घास छील रही थी। वह अकेली झोंपड़े में बेसुध सो रही थी। एक सिंह जो ताक में लग रहा वह झोंपड़े में आ पहुँचा और उसको उठा ले गया। भीलनी की निगाह पड़ी। वह बिल-लाने लगी। जब भील आया उसने रो कर कहा मेरी नन्द को तो शेर उठा ले गया। भील को जो दुख हुआ वह बयान से बाहर है। वह बनदेवी को प्यार करने लगा था; और सचमुच अपनी असली बहन समझने लगा था। जब उसने सुना कि बनदेवी को तो शेर ले गया वह रोता हुआ तीर कमान लेकर सिंह की भाट की ओर चला, स्त्री साथ थी। ईश्वर की लीला! शेर सोया हुआ था। रानी घायल थी और उसके पास बेसुध पड़ी थी। सांस आरही थी। भील ने जाना बहिन अब तक जीवित है। कोई चिन्ता नहीं वह बच जायगी। यह कह कर उसने दो तीर लगातार शेर की दोनों आँखों में मारे और जब जब वह उछलने को हुआ कमर से कटार खींचकर उस पर जा टूटा।

और उसका काम तमाम कर दिया। भीलनी को खुशी की कोई सीमा न रही ? उसने बनदेवी को गोद में उठा लिया। और प्रेम के आंसू बहाने लगी। फिर भील उसको झपड़े में लाया। और घावों की मरहम पट्टी की गई।

थोड़े समय में ही घाव भर गये और बनदेवी आराम से रहने लगी। पर भील उसको देखकर दुखी होता। एक दिन उसने कहा बहिन यदि तू रानी हो तो हम तीनों बहनोई की तलाश में घर से बाहर निकलें। यहां बैठे-२ कैसे पता लगेगा। यदि वह मिल जांय तो हम सब मिलकर जंगल में आनन्द से रहेंगे। बनदेवी की मन चाही हुई और वे तीनों खोज को चल दिये।

तीनों सलाह करके सूरजसिंह को तलाश में दिल्ली की ओर चल दिये। पर राह में एक और दुर्घटना घटी। जहां यह लोग ठहर रहे थे पास ही किसी सौदागर का डेरा लगा हुआ था। उसे मालूम हुआ कि भीलों के संग एक बड़ी सुन्दर और रूपवती स्त्री आई हुई है वह उसके देखने के लिये भीलों के पास आया और उनको लोभ लालच देकर बनदेवी के हवाले करने को कहा। सदाचारी बली भील कब ऐसी बात सुनने वाला था। अन्त में लड़ाई की नौबत आई। सौदागर ने भील और बनदेवी को गिरफ्तार करना चाहा। भील में इतनी शक्ति कहां थी कि वह सारे लश्कर पर विजयी हो पाता उसने भाग कर निकट ही राजा के दरबार में फरियाद की कि मेरी बहिन को एक सौदागर जबरदस्ती पकड़ कर लिये जा रहा है। संयोगवश यह दरबार सूरजसिंह का था। उसने फौरन कर्मचारी भेज दिये। सौदागर बन्दी बना हुआ पेश हुआ। संध्या समय था। सूरजसिंह ने बनदेवी को देखा वह अत्यन्त निर्बल होरही थी। मगर रूप रंग को कुछ हानि नहीं पहुंची थी। फिर भी राजा पहिचान न सका। बनदेवी को जरूर कुछ संशय हुआ। पर वह चुप रही। राजा ने अपने दरबार की किसी कोठरी में

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

बनदेवी और भीलनी को ठहरने को जगह दी। सौदागर हिरासत में ले लिया गया ओर राजा ने हुक्म दिया कल तुम्हारे मुकद्दमे की सुनाई होगी।

जिस समय यह आयुश हुआ उसी समय दो नव युवक राजा के पास लड़ते झगड़ते हुये आ पहुंचे। दोनों बड़े सुन्दर और बली थे। इनमें से जो बड़ा था कहने लगा मैंने जंगल में एक हिरन को मारा। इसका तीर बाद को लगा। पर यह कहता है कि शिकार मेरा है। छोटे ने कहा धर्मावतार! हमारा न्याय आपके हाथ है। निःसन्देह तीर तो इसी ने पहले चलाया पर हिरन घायल मेरे ही तीर से होकर गिर आप न्याय करें। इन युवको के सुभाव में क्षत्रीपन था। राजा ने पूछा तुम कौन हो? एक ने कहा मैं मल्लाह का बेटा हूँ। दूसरा कहने लगा मैं लकड़हारा हूँ। राजा ने कहा तुम दोनों भी यहीं आराम करो। आज संध्या समय होगया है कल तुम्हारा भी न्याय किया जायगा। वह दोनों एक साथ वहां ठहर गये।

राजा को मन में अति आश्चर्य हुआ! वह विचारने लगा न यह स्त्री भीलनी प्रतीत होती है न यह दोनों युवक मल्लाह और लकड़हारे हैं। इनका रूप रंग ढंग वार्तालाप उच्च कुल का सा मालूम होता है। हो न हो इसमें कोई रहस्य अवश्य है। चलो भेष बदल कर हम भी इनके पास ही छिप रहे और सुनें वह आपस में क्या बात चीत करते हैं। इससे सम्भव है कल इनके न्याय करने में कुछ सहायता मिले। यह सोच कर वह कोठरी के निकट ही आकर छिप रहा। जब सब लोग सो रहे' बड़ा लड़का कहने लगा। देखो बैठे बिठाये हमने भी क्या आफत मोल ली। आखिर शिकार के लिये झगड़ने की क्या जरूरत थी। आधा २ बांट लेते। यहां व्यर्थ में ही फँसे। छोटे ने कहा भाई बात तो सत्य कहते हो। पर अब तो बताओ तुम कौन हो? मेरा चित तुम्हारी ओर खिचा जाता है। उसने उत्तर दिया मैं क्या कहूँ।

वास्तव में बात तो यह है मैं मल्लाह का लड़का नहीं हूँ। मेरा पिता सूरजसिंह धारानगर का राजा था। मेरा नाम चन्द्रसिंह था। अब मल्लाह ने कुछ और रख लिया है। इतना सुनना था कि दूसरा लड़का उछल कर उसकी छाती से चिपट गया। भाई मैं भी विपयसिंह तुम्हारा छोटा भाई हूँ ; मुझको नदी में से लकड़हारे ने निकाला था।

दोनों मिलकर बड़े प्रसन्न हुए। फिर विपयसिंह कहने लगा सुनो यह कोठरी के भीतर दो स्त्रियाँ क्या कह रही हैं ? दोनों कान लगाकर सुनने लगे। बनदेवी रोकर भीलनी से कह रही थी। देखो ईश्वर की लीला ! मुझ पर कैसी विपत्ति आई है। आज मेरा पति जीवित होता तो क्या आज मैं ऐसी दरबदर मारी मारी फिरती ! या चन्द्रसिंह और विपयसिंह ही मौजूद होते तो अपनी माता का इस प्रकार निरादर और अवज्ञा न होने देते ! हा देव तेरी लीला अपरम्पार है ! दोनों लड़कों के कान खड़े हुए यह तो कोई हमारा ही हाल कह रही है। उसी समय उठे, दरवाजा खोलो ? किसने चन्द्रसिंह और विपयसिंह का नाम लिया है ? हम दोनों यहाँ मौजूद हैं। बात कहने में देर लगती है दूसरी घड़ी ही द्वार खुल गया। बनदेवी दिये के प्रकाश में अपने चन्द्र और विपय को देख कर झपटी, मेरे प्यारे पुत्रो ! मेरे कलेजे के टुकड़ों ! और उसने रोते रोते दोनों को अपनी छाती से चिपटा लिया और आँखें चाहे खता खा जाँय पर माता की आँखें अपने पुत्रों की सूरत नहीं भूलती।

सूरजसिंह का जी उछलने लगा। उसने धैर्य धरने की कोशिश की पर धैर्य कैसे बंध सकता था। आखिर उससे भी न रहा गया। वह कोठरी में चला आया। और उनकी ओर देख कर कहने लगा। मैं अभागा सूरजसिंह हूँ। पुत्र और स्त्री सब इससे चिपट गये। बनदेवी इससे कहने लगी। प्राणनाथ ! तुम्हारा वियोग कठिन था। यह कह वह पृथ्वी पर गिर पड़ी और बेसुध होगई।

राजा डरा ! कहीं इसको अधिक खुशी होने से मृत्यु न हो जाय ! पर इसी समय इसके मुख पर गुलाब जल छिड़का गया। उसने नेत्र खोल दिये। चारो आदमी मिलकर खुश हुये रानी उसी समय भीलनी के संग महल को गई। राजा रानी और पुत्रों से उनके हालात सुनें और अपनी बीती उनको सुनाई। फिर भील और भीलनी का उपहार सुनकर उनकी कृतज्ञता प्रगट की।

प्रातः दरबार में सब मुजरिम हाजिर किये गये। राजा ने सौदागर को देशनिकाला दिया। भील को अपना सलाहकार बनाया और भीलनी को रानी के साथ रहने का आयुश दिया।

इस घटना के दो वर्ष बाद उसने चढ़ाई करके धारानगर को भी जीत लिया और उनकी शेष आयु सुख चैन में व्यतीत हुई।

जिस तरह आपस में इनको मिलाया।
बिछुड़े सब मिलें मेरे रघुराया ।

धन्य हैं वह प्राणी जो भगवान पर भरोसा रखते हुए धर्म के पथ को नहीं त्यागते। क्योंकि वह ईश्वर के सच्चे पुत्र कहलायगे और सांसरिक परीक्षा और कष्टों के उपरांत इनको प्रभु के चरण कमल की छत्रछाया में जीवन व्यतीत करने का सुअवसर प्रदान होगा।

कबीर चिंता क्या करे चिंता से क्या होय।
मेरी चिंता हरि करे चिंता मोहि न कोय ॥
अंडा पालें काछुआ बिन थन राखै पोख।
यों करता सबको करे पाले तीनों लोक ॥

सैन (सैना) जी भक्त की कथा

सैन जी जाति के नाई और स्वामी रामानन्द जी के शिष्य थे। राजा के चाकर थे। हजामत बनाने, तेल लगाने और शरीर मलने का कार्य करते थे। साधु सेवा का इष्ट था। एक दिन महल जा रहे थे। मार्ग में साधु मिले। उन्हें अपने घर लाये। न्हिलाया, धुलाया, हजामत की, खाना खिलाया। सत्संग हुआ। उसमें कुछ ऐसे बेसुध हुए कि तन बदन का होश नहीं रहा। राजा की सेवा का विचार जाता रहा। इतने में उनकी आकृति का एक पुरुष राजा के पास गया और अपनी सेवा से उसे बहुत प्रसन्न किया। यह देर से पहुँचे और अपनी भूल और अपराध के लिये क्षमा याचना करने लगे।

राजा बोले सेना? तू तो अभी आया था आज भली प्रकार मुझे अपनी सेवा से सन्तुष्ट और प्रसन्न कर गया। मेरा शरीर फूल की भाँति हल्का है। तू वास्वव में अपने कार्य व्यवसाय में निपुण है परन्तु क्या बात है आज की भाँति ऐसी मालिश पहले कभी नहीं की थी?

सैन ने समझा "राजा यों ही बातें बनाता है।"

उसने कहा महाराज! मैं तो अपराधी हूँ। आज अनजान में मुझसे भूल हो गई। आप दयालु कृपालु हैं क्षमा कर दिया, वरन् और कुछ इन बातों का तात्पर्य नहीं है।"

राजा मुस्कराया "तू कहीं पागल तो नहीं हो गया देख हजामत हुई है या नहीं। तूने मुझे आप न्हिलाया, धुलाया और वहकी-ब्रहकी बातें कहता है। विश्वास न हो तो औरों से पूछ ले। दरबारियों ने भी राजा का समर्थन किया और सैन को निश्चय हो गया कि आज भगवान ने आप आकर मेरे बदले राजा की सेवा की है और

इनका शरीर और मन फूल की भाँति सूक्ष्म और हल्का हो रहा है। तब उसने स्पष्ट शब्दों में कह दिया "महाराज ! मैं तो आया नहीं था साधुओं की सेवा में देर हो गई थी। आप मेरे अड़ौसी पड़ौसियों से पूछ देखिये। हाँ मेरे बदले दयासागर भगवान ने स्वयं आकर सेवा की है।" राजा ने पूछताछ की। प्रतीत होगया कि सेना सच कहता है। मन से विश्वासी हुआ चरनों में गिरा और उसका शिष्य बन गया। और राजा के समस्त सम्बन्धी और कुटुम्बी तथा कर्मचारी उसके शिष्य हो गये।

सेवक की सेवा बस कर, स्वामी सेवक आप हुआ।
उसका बोझ धरा सिर अपने, कारज सब चुपचाप हुआ॥
प्रेम भक्ति में सच्चा हो जा, त्याग बुद्धि छल चतुराई।
सहज ही मानुष जन्म सुफल हो, छूटे जग अगमापायी॥
ज्ञान पंथ है खड्ग की की धारा, कट कट गिरा जो पग धारा
भक्ति प्रेम में नहीं कठिनाई, सहज ही जा भव जल पारा॥
भक्त को माया नहीं सताती, भक्त गुरु के हैं प्यारे।
ज्ञानी नेमी धर्मी कर्मी, भक्ति भाव से हैं न्यारे॥
राधास्वामी नाम सुमिर नित, राधास्वामी गुन गाले।
शुभ अवसर पाया है साधु ! भक्ति रत्न धन को पाले॥

★

सरदारबाई

यह पतिव्रता वीरांगना राजधानी पाटन के निकटरानीपुर की रहने वाली थी। वहाँ कल्याणवंश का राजा क्षेमराज राज करता था। वह उसकी पुत्री थी। उस समय गुजरात दिल्ली राजधानी सूबे के आधीन था। पर फिर भी गुजरात का उत्तरी भाग किसी अंश में आजाद समझा जाता था। क्योंकि यहाँ के बसने वाले मनचले राजपूत बादशाह के अधीन नहीं रहना चाहते थे पाटन में बादशाह की ओर से रहमतखाँनामी सूबेदार मुकर्रिर था। संयोगवश एक बार सूबेदार रानीपुर आया। राजा क्षेमराज ने उसका बड़ा आदर सत्कार किया। और यथासम्भव महमानी में कोई कमी न रक्खी। संयोगवश जब एक समय सूबेदार राजमहल में जा रहा था। सरदारबाई बाग में सैर कर रही थी। सूबेदार को देख कर उसने अपने मुख को ढक लिया। पर अकस्मात् वायु के झोंके से उसका मुख खुल गया और रहमतखां देखते ही उस पर मोहित हो गया। पहले इसका विचार रानीपुर से नहीं था। पर सरदार बाई के रूप और लावण्य ने कुछ ऐसा बेसुध बना दिया कि वह अपने विचार के विरुद्ध वहाँ ज्यादा ठहरने को विवश हुआ अब वह इस चिन्ता में रहने लगा कि सरदारबाई किस तरह उसके हाथ आये वह भली प्रकार जानता था कि क्षेमराज अपनी पुत्री के साथ कदापि न करेगा इसलिये उसने उसके पुत्र मूलाराज के साथ अपना याराना स्थापित किया और उसको अपने जाल में फाँस लिया। मूलराज सीधा और बेवकूफ भी था। संध्या समय जब वह रहमतखाँ से मिलने आया उसने उसको मदिरा पिला दी और जब वह बेसुध होने लगा उसके साथ जुआ खेलना शुरू किया राजकुमार हारता गयाजबउसके

पास कुछ न रहा तो रहमतखाँ ने हंसी-२ में कहा कि, तुम अपनी बहिन सरदारबाइ को दाव पर लगा दो अगर तुम्हारी जीत हुयी तो उत्तर का सारा इलाका तुम्हें दे दूंगा वरन तुमको अपनी बहिन सरदारबाई का विवाह मेरे साथ करना होगा। मूलराज बेसुधी की दशा में था। जुये की हार बुरी होती है। उसने इस बुरी शर्त को मान लिया। बाजी बदी गयी और जब पासा डाला गया फिर भी रहमतखाँ की जीत हुयी। अब जाकर कहीं राजकुमार का नशा किरकिरा हुआ। अपने किये पर मन ही मन पछताने लगा और अफसोस करने लगा पर क्या करता। मजबूर। काटो तो लोहू नहीं बदन में चेहरे का रंग बिल्कुल फीका पड़ गया।

अर्धरात्रि का समय हो चुका था। वह अपने कुटिल यार से रूखसत होकर अपने महल में आया। उसकी रानी रूपानदे देर से उसकी वाट देख रही थी। देर के बाद वह वहाँ पहुंचा सूरत शकल उतरी हुयी, औसान खता थे। रानी ने बातचीत करना उचित नहीं समझा और सो रहने की विनय की क्या कि नींद सदा भयभीत होने की दशा में एकमात्र औषधिसमझी जाती है पर मूलराज को नींद कहाँ। वह पलंग पर रात भर मछली के समान तड़फती रही। पलक से पलक न लगा नींद हराम हो गयी। रूपानदे अन्त में अपने धैर्य को कायम न रख सकी उससे पूछने लगी क्या बात है ? किस कारण आप इतने व्याकुल हैं ? और जब इसने आदि मे अन्त तक सारा हाल कह सुनाया तो उसका भी माथा ठनका और वह खेद में चिन्तित होकर कहने लगी कि आपने भारी गलती की। रहमतखाँ ने आपके भोलेपन का लाभ उठाया। आपको अधिकार ही क्या था कि बहिन को दाव पर लगाते। मूलराज क्या उत्तर दे ? चुप ! तीर कमान से निकल चुका था अब उसका वापस आना

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

कठिन था।

सूर्य के उदय होते ही रहमतखाँ ने थोड़े आदमियों के साथ एक पालकी मूलराज के महल में भिजवायी। क्षेमराज को कुछ खब्रर नहीं थी। पालकी देखकर आश्चर्य चकित रह गया पर रूपानदे ने सारा हाल अपनी ननद को कह सुनाया। और उसकी भाई के पासे में हारने का सब ब्हौरा आद्योपान्त कह दिया। सरदारबाई के जी में उसी समय आग लग गयी वह कहने लगी भाभी! भाई पागल हो गया है उसको न अपने कुल की मर्यादा का ध्यान है, न क्षत्रीवंश की परम्परा का इस कारण मेरी सम्मति में उसके वचनों का कोइ महत्व नहीं मेरे ऊपर इसके अतिरिक्त पिता के जीते जी भाई का बहिन पर कोइ अधिकार नहीं। इसको क्या हक था कि वह बहिन को दाब पर लगा बैठा। मेरी जान में जब तक जान है मैं कभी अपने वंश को दाग न लगने दूँगी। दुनियाँ इधर की उधर हो जाय पर मैं कभी अवसर न आने दूंगी कि भाई की बुद्धिहीनता के कारण मेरे कुल को बट्टा लगे। इस समय अधिक वार्तालाप करने की अधिक शक्ति नही रही थी। वह उठी और सीधी अपने कमरे की ओर चली गयी। दरवाजे के सामने सुन्दर दर्पण मौजूद था उस पर निगाह गयी और अपने रूपस्वरूप की छाया देखकर कहने लगी धिक्कार है! मेरी इस सुन्दरता रूप और लावण्य पर न रहमतखाँ ने बाग में मुझे देखा होता न आज यह महान आपत्ति हमारे कुल पर आयी होती।

जब क्षेमराज को यह हाल मालूम हुआ उसने पालकी को वापिस कर दिया और रहमतखाँ को कहला भेजा कि मूलराज को कोई अधिकार नहीं था कि वह तुमको इस प्रकार का वचन देता। इसलिये मैं इसकी बात को मानने वाला नहीं।

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY PURNADAYAL

जिस समय पालकी वापिस गयी और सूबेदार ने राजा का सन्देश सुना उसकी क्रोधाग्नि भभक उठी। और उसी समय वहां से कूच करके राजधानी वापिस आया। और सेना के संग्रह करने में लग गया। क्षेमराज जानता था कि इस मामले का अन्त खून खच्चर होगा। पर अव्वल तो इसका राज छोटा दूसरे इसकी फौजी ताकत इतनी कम थी कि शाही सूबेदार के मुकाबले में उसको विजय पाने का अनुमान भी नहीं हो सकता था। परिणाम यह हुआ कि जब रहमतखाँ की भारी सेना रानीपुर पर चढ़ दौड़ी यह अपने किले दरियागढ़ में घिर गया किसी को साहस नहीं था कि मुसलमानों का मुकाबला करता रूपानदे ने अवश्य जी खोलकर शत्रुओं का मुकाबला किया। इसके साथ रानीपुर के राजपूत भी कट-कट कर मर गये और रूपानदे ने भी निहायत मर्दानगी से जान दी। कई घंटे तक संग्राम छिड़ा रहा अन्त में जब योद्धा मर खिप गये किला भी हमला करने वालों को न रोक सका। क्षेमराज, मूलराज और सरदारबाई तीनों बन्दी बना लिये गये। मूलराज कायर था इसने रहमत खाँ की बातों में आकर मुसलमानी धर्म इख्त्यार कर लिया। और सूबेदार ने इसको आजाद करके राजनीतिक चाल के बहाने कहीं और जगह भेज दिया। यह बूढ़े राजा-रानी और कुमारी सरदारबाइ बन्दी बनाकर पाटन लाये गये जहाँ एक-एक को अलग-अलग स्थानों में रखा गया और बड़ी चौकसी के साथ पहरे का बन्दोबस्त किया गया। रहमत खाँ सरदारबाई की सुन्दरता पर मोहित था। तीन दिन तक तो इसने कुछ छेड़छाड़ न की। चौथे दिन उसने कहला भेजा कि आज तुम्हारे डेरे पर आऊँगा। सरदारबाई की दशा विचित्र थी। पहले तो इसको अपने भाइ की हरकत पर अति क्रोध था। पर अब चित्त में एक प्रकार का धैर्य और सन्तोष

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

आ गया था उसने सूबेदार के सन्देश का कोई उत्तर न दिया। और शाम से पहले वह सज-धज कर उसके इन्तजार में बैठी रही। जब रहमत खाँ आया। वह सनमानपूर्वक उठी और उसको सादर आसन दिया। जहाँ सूबेदार उसके रूप और लावण्य पर मुग्ध था तो अब उसके आदर और शिष्टाचार पर भी लटटू हो गया। इसने सरदारबाई से सुरा का प्याला माँगा। उसने बड़ी खुशी और प्रेम के साथ उसकी मदिरा-पान की भी सेवा की। बातचीत कुछ नहीं हुई। पर जब मुस्करा कर सरदारबाई उसको सुरा के प्याले पर प्याले झुकाती, वह बड़े प्रेम से सिर झुकाकर पीता जाता और झूम झूम कहता जाता:—

गर यार मय पिलाये तो फिर क्यों न पीजिये।
पुजारी नहीं मैं शेख नहीं बिरहमन भी नहीं॥

परिणाम यह हुआ कि मदिरा ने उसको बदमस्त कर दिया और जब वह पूरे तौर पर बेहोश हो गया। सरदारबाई अपनी जगह से उठी। उसने वस्त्र पहने और पहरे वालों की नजर बचा कर एक ओर को चलती बनी। कई मील के फासले पर एक योगी का आश्रम था। सरदारबाई वहाँ पहुंची और सारे शरीर पर भस्म लगाकर उसने भी वहाँ योगिन का वेषधारण कर लिया। यहाँ रहते-रहते कुछ काल बीत गया। संयोगवश चन्द्रावति नगर का राजकुमार वीरसिंह जिसको सरदारबाई जानती थी आ निकला। उसने राजकुमारी को नहीं पहचाना पर सरदारबाई ने उसको देखकर सब हाल आदि से लेकर अन्त तक कह सुनाया। वीरसिंह को खुद भी सरदारबाई की तलाश थी। वह प्रसन्न होकर कहने लगा, 'आज से आठवें दिन में पाटन पर कब्जा कर लूँगा।' बहतर है तुम भी हमारे

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

संग चलो। चन्द्रावति से जब हम सेना लेकर आयेंगे, शत्रुओं के छक्के छुड़ायेंगे। सरदारबाइ बोली नहीं तुम जाकर अपनी सेना ले आओ। मैं अम्बा भवानी पर इसी वेष में तुम्हारा इन्तजार करूँगी।

वीरसिंह तो उसी समय चन्द्रावति को चल दिया। पर अभी मुश्किल से दो-चार मील ही गया होगा कि सूबेदार के आदमियों ने सरदारबाई को पहचान लिया और वह उनके हाथ पड़ गयी। जिस समय यह पाटन से भागी थी आदमियो की अनेक टोली इसकी खोज में जगह-जगह को भेज दी गयी थी। और सूबेदार ने पता लगाने वालों को बहुत कुछ इनाम व इक्काम देने का वचन भी दिया था। इसकी खोज बड़े उत्साह के साथ की जा रही थी। सिपाहियों ने दीन दुःखी राजकुमारी को पशुओं के समान एक पिंजड़े में बन्द कर लिया। और पाटन की ओर चलते बने।

इश्वर की लीला कुछ विचित्र होती है। जब सिपाहियों का काफिला अम्बा भवानी के निकट होकर जा रहा था इनमें आपस में इनाम के बारे में झगड़ा होने लगा। गाली-गलौज की नौबत पहुंची। तलवारें म्यान से निकल कर आपस में चलने लगीं। और सब कट-कट कर मर गये। गाड़ी वाला शेष रहा था, उसने सोचा, चलो अच्छा हुआ। सारा इनाम मुझको ही मिल जायेगा पर बेचारा थोड़ी दूर ही गया होगा कि एक भयानक चीते ने झपटकर उसका काम तमाम कर दिया। बैल चीते के डर से बगटट भागने लगे। पिंजड़ा गाड़ी से नीचे गिर गया और पता नहीं लगा कि बैल गाड़ी को किस तरफ ले गये।

जब पिंजड़ा गाड़ी से नीचे गिरा। सरदारबाइ के थोड़ी

सी चोट आ गयी थी पर वैसे वह सब तरह से ठीक थी प्रातःकाल जब सूर्य उदय होने को हुआ, सिद्ध और कौए जहाँ सिपाहियो की लाश पड़ी हुयी थी उसके चारों ओर मंडराने लगे। जंगल के उस भाग में फावड़ा एक जंगली जाति बस रहीं थी। जब इन लोगो ने वहाँ मनुष्यों की लाशें पड़ी हुई देखीं और सरदारबाई को पिंजड़े में बन्द पाया उनको बड़ा आश्चर्य हुआ। वह विश्वास के कच्चे थे, कहने लगे. देखो अम्बे भवानी ने किस प्रकार शत्रुओ के हाथ से अपने जन की रक्षा है। यह कहकर वह खुशी-खुशी पिंजड़े को उठा लाये और अम्वे भवानी को पंडे के सुपुर्द कर दिया।

सरदारबाई ने इन जंगल जाति के लोगों के सद्व्यवहार और पुजारी की दया, और करुणा को देखकर अपने गले से मोतियों का हार उतार कर उनको बांट दिया। वह वहाँ उन की देखरेख में छिपे रूप में किसी सुरक्षित स्थान में रहने लगी।

सरदारबाई अम्बा भवानी में रह रही हैं। उसको कई दिन वहाँ बीत चुके। वीरसिंह के कुछ राजपूत उसकी खोज में आये पर किसी को उसका पता नहीं चला। क्योंकि पुजारी इसका भेद किसी को नहीं देता था। दूसरे सरदारबाई किसी मर्दाने वेश में किसी गुफा में छिपी रहती थी। तलाश करने वाले बड़े परेशान हुए। पर जब पुजारी को यह भले प्रकार से ज्ञात हो गया कि वीरसिंह के भेजे हुए हैं। वह इनको उनके पास ले आया। और इस प्रकार वीरसिंह और सरदारबाई परस्पर मिलकर बड़े प्रसन्न हुए। उनकी यह सम्मति हुई कि दोनों को पाटन पर धावा बोलकर राजा-रानी को कैद से आज़ाद कराना चाहिए। और इस इरादे से वह वहाँ से

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY PURNADAYAL

रवाना हुये।

अब पाटन का हाल सुनिये। सरदारबाई के भाग जाने पर रहमतखाँ को भारी अफसोस था। उसने हर प्रकार से उसकी खोज करनी चाही। पर जब कहीं खोज न चला वह बड़ा व्याकुल हो गया। और बेचारे बूढ़े राजा और रानी पर अपने अत्याचार का बुखार उतारने लगा। उसका स्वभाव इतना बिगड़ गया था कि वह रानीपुर के समस्त कैदी हिन्दुओं को जबरदस्ती मुसलमान बनाने लगा और जिस किसी ने मुसलमान होने से इन्कार किया वह बड़ी निर्दयता के साथ फाँसी पर लटका दिये गये। रहमतखाँ ने राजा और रानी से भी मुसलान होने का आग्रह किया। पर उन्होने स्पष्ट रूप में इन्कार कर दिया। अब तो उसकी क्रोधाग्नि और भी प्रचंड हो गयी और उसने हुक्म दिया कि यदि यह २४ घण्टे के अन्दर मुसलमान न बने तो दोनों को फाँसी पर लटका दिया जाय।

क्षेमराज और उसकी रानी को फाँसी पर लटकाने का समाचार जंगल की आग की तरह चारो ओर फैल गया और जब कहने वालों ने सरदारबाई और वीरसिंह को घटना की खबर दी। उन्होंने सेना के एक बड़े भाग को पीछे छोड़ दिया इने-गिने पचास साठ सवार साथ लेकर तेजी से उस स्थान को पहुंचे जहाँ राजा और रानी को अपने धर्म पर दृढ़ता से अपने धर्म पर कायम रहने का दण्ड दिये जाने को था। फाँसी खड़ी हुई थी। स्त्री-पुरुष दोनों अपनी मृत्यु की घड़ियाँ गिन रहे थे। तमाशा देखने वालों की भीड़ इनके चारों ओर एकत्रित हो रही थी। सब समझ रहै थे कि अब यह बृद्ध दो-चार घड़ी के मेहमान हैं। दुनियाँ की कोई शक्ति अब इनको मौत के

पंजे से नहीं छुटा सकती।

पर देखो जिस समय उनके फाँसी पर चढ़ाये जाने की अन्तिम आज्ञा दी जा रही थी। ठीक उसी समय राजपूत सवार के तेज रफ्तार घोड़ों का एक दल मुसलमानों को अपने टापों से कुचलता हुआ दम के दम वहाँ आ पहुंचा। एक तलवार ने राजा के जल्लाद का सिर देखते-देखते धड़ से अलग कर दिया और इस बात को प्रत्यक्ष कर दिखाया कि" मारने वाले से बचाने वाले का हाथ कहीं बलवान और महान होता है।

माता-पिता दोनों ने सरदारबाई को पहचान लिया। वह समय कुछ और तरह का था। राजपूतों को बहुत कुछ काम करना बाकी था। सरदारबाई और वीरसिंह दोनों मुसल--मानों की मारकाट मचान लगे। रहमत खाँ का सरदारबाई के हाथ से कत्ल हुआ। जिस समय सरदारबाई का हाथ सूबेदार के सिर पर पड़ा यह आवाज सुनाई दी "देखो यह परिणाम है एक राजपूतनि की हविश करने का।"

अभी इस मारकाट की हलचल खत्म न हो पायी थी कि वीरसिंह की बची हुई सेना ने पाटन पर धावा बोल दिया। और सूबेदार की गैरहाजिरी में जब कोई अफसर न रहा, शाही फौज इधर-उधर भाग निकली और उस दिन पाटन नगर के ऊँचे बुर्जों पर चन्द्रावती नगरी का झण्डा लहराने लगा।

जब हर ओर से घेरा डाल दिया और शत्रुओं का सब खटका जाता रहा, सरदारबाई ने वीरसिंह को अपने माता-पिता के सामने उपस्थित किया और उसकी वीरता का समाचार कह सुनाया। दोनों वीरसिंह से परिचित थे। उनका हृदय गद्‌गद् था। अधिक वार्तालाप की शक्ति नहीं रही थी

सरदारबाई का हाथ पकड़ कर माता-पिता दोनों ने वीरसिंह के चरणों में डाल दिया और बोले "आपकी दया और करूणा का बदला हम कुछ चुकाने के योग्य नहीं, सरदारबई को आपकी दासी के समान अर्पण करते हैं। वीरसिंह ने सिझुका कर खुशी जाहिर की।

इसके बाद इन दोनों का विवाह रचा गया। रानीपुर पर प्रहले भी भाँति क्षेमराज को कब्जा दिलाया गया। पाटन और चन्द्रावति पर वीरसिंह राज करने लगा। कुछ समय तक दोनों का जीवन सुख-चैन से व्यतीत हुआ। पर जब दिल्ली के बादशाह को पाटन के हाथ से निकल जाने का समाचार मिला। वह रात-दिन वीरसिंह को दंड देने की चिन्ता में रहने लगा और उसने फिर जीतेजी इनको सुख-चैन से नहीं रहने दिया।

कुछ साल पर्यन्त दिल्ली के बादशाह का भरोसे का सरदार खुसरो खाँ बहुत बड़ी सेना लेकर चन्द्रावति पर चढ़ दौड़ा। राजपूत और पठानों में घोर संग्राम हुआ। वीरसिंह अधिक समय तक दिल्ली की सेना के साथ लड़ता रहा। पर अन्त में उसकी सफलता न हुई। और खुसरो खाँ के हाथों मारा गया। जिस समय उसके छोटे भाई ने संग्राम भूमि से भागकर सरदाबाई को वीरसिंह के मर जाने का समाचार सुनाया। उसके अंग-अंग में क्रोधाग्नि की जलन भड़क उठी और जिन शब्दों में उसने मानसिंह को उसके कायरपन पर धिक्कारा है। वह वास्तव में सोचने और विचार करने योग्य है। वह मानसिंह से कहती है रे नीच! कायर तुझको लज्जा नहीं आयी कि संग्राम से भागकर तू मुख दिखाने आया है। धिक्कार है उस घड़ी को जिसमें तेरा जन्म हुआ। धिक्कार है

उन नक्षत्रों को जिसके उदय होने के समय तुझ जैसे कुलघाती ने जन्म लिया। तेरा कर्तव्य था कि तू अपने राजा के साथ स्वर्गधाम को जाता। तेरा कार्य था कि राजा के शत्रुओं से उसका बदला लेता। तेरा धर्म था कि सिंह के समाम नाद करता हुआ जिधर विफरता उधर ही शत्रुओं के परे के परे तलवार के घाट उतार देता। रे दुष्ट यदि तू मेरे पति का भाई न होता तो इसी समय तुझको अपने हाथ से कतल कर देती। जा मेरी आँखों के आगे से दूर हो जा। मानसिंह वहाँ से नार नीची करके चला आया और इतने में समाचार मिला कि जिस समय वीरसिंह पृथ्वी पर गिरा वह सरदार! सर-दार चिल्ला रहा था और मुसलमान बराबर बढ़ते हुए चले आ रहे थे।

मानसिंह को जीवित देख उसकी माता, भावज और बहिन सबने ही इसका तिरस्कार कर दिया। जब माता की इस पर निगाह पड़ी वे बोली रे निर्लज्ज के पुत्र! दूर हा अपना मुंह मत दिखा।

वास्तव में बात यह थी कि मानसिंह कायर था। उसमें लड़ने भिड़ने का साहस था न बल पराक्रम। सरदार की अनु-पस्थिति को महसूस करके सरदारबाई उठ खड़ी हुई और अपने ८ महिने के पुत्र को सास की गोद में बिठाकर कहने लगी माताजी! पति ने मरते समय कई बार सरदार शब्द उच्चारण किया था। इसके दो अर्थ हो सकते हैं। एक तो यह कि कोई वीर पुरुष उसके पीछे अपने सिर पर सरदारी ले ले। दूसरे सम्भव है वह मृत्युकाल में भी मेरे वियोग को सहन न सके। लो यह अब तुम्हारा पुत्र! और तुम ही इसकी माता हो। और मैं अपना धर्म पालद करने जाती हूँ। सरदारबाई

ने अपने जनाने वस्त्र उतार दिये तथा जरा बख्तर पहन लिये और शस्त्रों से सुसज्जित हो, तेज कदम घोड़े पर सवार होकर संग्राम भूमि में पहुंची। इसको देखकर राजपूतों में नयी शक्ति का संचार हो आया। वह ऐसा प्रतीत होती थी मानो वीर, शक्ति स्वयं रूप धर के मैदान में आ डटी है। उसकी ललकार को सुनकर राजपूत सेना उमड़ती हुई लहरों के समान आगे बढ़ने लगी और बड़ी शीघ्रता से किले के सब बुर्जों पर सिपाहियों की सेना रक्षा के हेतु जा धमकी। किले का फाटक उसकी आज्ञा से बन्द कर दिया गया। पर शत्रुओं के मुकाबले की चिन्ता में वह स्वयं भीतर न जा सकी। और १०० रण-धीर सरदारों को साथ लिये हुये फाटक पर खड़ी हो गयी। खुसरोखाँ को आशा थी कि वीरसिंह के मरने के बाद फिर किसी को मुकाबले का साहस न होगा। पर जिस समय इसने फाटक पर खड़ी हुई इस वीर ललित ललना को देखा वह आश्चर्य चकित रह गया। और कहने लगा यह राजपूत देवी है। जिसके फलस्वरूप पाटन मुसलमानों के हाथ से निकल गया था। रानी और उसके बाकं शूरवीर बड़े साहस और वीरता से लड़ते रहे। सौ सरदारों में से कुछ थोड़े से ही शेष रह गये थे बाकी काम आये। इनमें राजपूत सिपाहियों की गिनती नहीं है। मुसलमानों की सेना को रानी पर विजय पाने का अवसर नहीं मिला। अन्त में जब उनका लश्कर डेरे की ओर चला आया। किले का फाटक खोल दिया गया और रानी अपनी थोड़ी सी सैना के साथ अन्दर दाखिल हुई।

दिल्ली की सेना अनगिनत थी। सरदारबाई के आदमी इने गिने थे वे किले में ही घिर गयी। एक महिने तक किले में घिपी-२ अनेक कष्ट और क्लेश सहन करती हुयी शत्रुओं का मुकाबला करती रही। पर जब देखा कि रसद की कमी

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY PURNADAYAL

है और सब लोग घिरे हुए कष्ट और विपत्ति में हैं उसने संध्या समय राजपूत सरदारों को बुलाया और कहने लगी वीरो ! समय विपरीत हैं। अब हमारे जीवन की अन्तिम घड़ी निकट हैं। एक ओर स्वर्ग है दूसरी ओर नरक है। यदि मरते हैं तो स्वर्ग का सुख भोगने को मिलेगा। यदि जीवन की लालसा है तो नीचता है। ख्वारी है। बरबादी है। अवज्ञा हैं। मैं जानती हूं तुम क्या चाहते हो। मैं जानती हूँ तुम्हारे मन में क्या-क्या है। राजपूत्त कभी अवज्ञा और कायरपन सहन नहीं करते। आज अन्तिम दिन तुम्हारी रानी तुमको पान का बीड़ा बाँटती है। उसको लो और केसरिया बाना पहन कर कल प्रातः ही अपने राजा के मार्ग के अनुगामी बनो।

सरदारो के समाज में सन्नाटा छा गया। सबने ही प्रसन्न चित्त से शीश नवा कर रानी के हाथ से बीड़े लिये और अपनी बातों और चलन से यह साबित कर दिखाया कि उनके बीच एक भी ऐसा कायर नही है जो धर्म क्षेत्र,रणक्षेत्र में जान देने से जी चुराता हो।

सारी रात शस्त्रों की सफाई और प्रातःकाल के इन्तजार में व्यतीत हुई। जब प्रातःकाल का समय हुआ सरदारबाई व उसके बाँके वीर राजपूत केसरिया बाना पहनकर किले से बाहर निकले और वह थोड़े से वीर ही मुसलमानों की सेना पर इस तरह टूट पड़े जैसे भूखा सिंह भेड़-बकरियों के गल्ले पर विफर जाता है भूमि लाशो से पट गयी। जगह-जगह पर खून की धारा बह चली। ऐसी वीरता ! हथेली पर सिर रक्खे हुये, निर्भय, साहस और पराक्रम का दृश्य कठिनता से किसी को देखने में आया होगा। रानी की तलवार की काट और चमक तो बिजली के समान थी। जिसकी गर्दन पर पड़ी वही

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

काम आया प्रतीत होता था मानो स्वयं महाकाली हाथ में खप्पर लिये खून की प्यासी है।

एक-एक ने सैकड़ों को मारा। और इस प्रकार मार-काट करते हुये शत्रुओं की लाशों पर लेटकर वह पवित्र आत्मा स्वर्गधाम को सिधार गयीं। सबसे अन्त में सरदारबाई घायल होकर घोड़े की पीठ पर से नींचे गिर पड़ी और सहज ही शत्रुओं के हाथ गिरफ्तार हो गयी। खुसरो खाँ ने कुछ सोच-समझकर इसको अपने डेरे में स्थान दिया। खुसरो खाँ नीच जाति का हिन्दू था। मुसलमान हो गया था। जब वह सामने आयी। घायल, बेबस, बेकस, दीन-दुखी सरदारबाई के साथ इस नीच, कुटिल और कमीन हिन्दू ने अपनी स्त्री बनने की इच्छा प्रकट की। या तो वह घावों से अधिक खून बह जाने के कारण अधिक बलहीन हो रही थी और वह कहाँ अब क्रोध के कारण उसने खुसरो खाँ को लान तान देना शुरू किया। वह बोली रे दुष्ट! पापी! निर्दयी! हत्यारे! तुझको न ईश्वर का डर है। न धर्म का डर है। न लोक लाज है और न परलोक का भय है। नींच! तूने दुनियाँ के लालच से अपने धर्म को बेच दिया। वेदोक्त मार्ग के बदले मुसलमानों के धर्म को ग्रहण किया। तू गीदड़ होकर सिंहानी के हाथ का इच्छुक है। मुझको भी देवलदेवी और कमलादेवी समझा होगा। इस प्रकार उत्तेजित होकर उसने उसको हजार बातें कहीं। बुरी से बुरी बातें सुनायी और परिणाम यह हुआ कि वह बेसुध होकर पृथ्वी पर गिर पड़ी। खुसरो खां ने उसे उठाकर एक खाट पर डालदिया और खुद उस खाट पर बैठकर पंखा झलने लगा। दो-चार घड़ी पीछे जब उसने आँख खोली। खुसरोखाँ को देखकर उसके नेत्रों में खून उतर आया। उस समय उसने कमर से कटार खींच ली। अगर खुसरो खाँ हट न जाता तो

क्या अजब वह उस पर बिजली के समान गिर पड़ती। जब वह हठ गया। उसने वही कटार अपने पेट में झोंक ली आतें बाहर निकल पड़ी और जब देखा कि डेरे में कोई नहीं है वह उठ कर भाग निकली। और चन्द्रावति की ओर चल पड़ी। पर आप ख्याल कर सकते है कि ऐसा घायल प्राणी कैसे रास्ता तय कर सकता है? थोड़ी दूर ही चलकर वह गिर पड़ी और बेसुध हो गयी। संयोगवश चन्द्रावति का भाटचारुण आ रहा था ' उसने अपनी रानी को पहचान लिया। और उसकी आँतों को पेट में दबाकर अपनी पीठ पर लाद लिया और एक गाँव के निकट ले आया। जब रानी की मूर्छा जागी उसने चारुण से कहा। मेरे शरीर पर जल छोड़ो। चाण्डाल ने मुझको छू लिया है। भाट जान गया कि रानी का अन्तिम समय आ पहुंचा है। इसलिये उसने उसी समय अपने हाथों से स्नान कराया और लीपी हुई जगह पर लिटा दिया रानी बोली, सबकी जय हो! अपने पुत्र को तुम सब लोगों के हाथ सौंपती हूं। देखना मेरे बूढ़े सास ससुर को दुःख न होने पावे ईश्वर चन्द्रावती नगरी की प्रजा की रक्षा करे! सब अपने धर्म पर आरुढ़ रहें! लो अब मैं जाती हूँ राम! राम!!

इस प्रकार बोलते-बोलते इस वीर पवित्र और पतिपरायण ललित ललना ने अपने प्राण त्याग दिये और इस प्रकार संसार में सत्यब्रत की नजीर कायम की। वह धन्य थी उसका पराक्रम धन्य था। और उसका धर्मभाव सराहनीय था।

पाठकजन! ईश्वर करे इस पुनीत और पवित्र वीराङ्गना का सूक्ष्म इतिहास आप लोगों को भी सत्य का मार्ग दरशाये गुरू सबका कल्याण करें।

परमसन्त हजूर मानव दयाल जी महाराज का हरियाणा में

संक्षिप्त सत्संग दौरा प्रोग्राम

१९-२-१९७९ से ३०-२-१९८९ सत्संग—नागपुर, श्री आर० डी० कोठारी, ८२, केनाल रोड, रामदास पेट, नागपुर (महाराष्ट्र)

२९-२-१९८९ से २२-२-१९८९सत्संग – इटारसी श्री चरनजीत सिंह, पंजाब साइकिल स्टोर्स, स्टेशन रोड, श्री सुन्दरदास, अमर रेडियोज इटारसी ।

२४-२-१९८९ से २७-२-१९८९ तक सत्संग उज्जैन श्रीमती रामगोयल, वस्त्र व्यवसायी, छोटा सर्राफा उज्जैन (२) श्री सूर्यनारायण भट्ट, ३६—अब्दालपुरा, उज्जैन

२८-२-१९८९ से ३-३-१९८९ सत्संग इन्दौर - श्री एम० के० गर्ग, ९-आनन्द नगर, इन्कम टैक्स आफीसर कालोनी, चितावड़ रोड, इन्दौर, फोन नं० ६५५४३

५-३-१९८९ प्रातः १० बजे मानवधाम, ग्राम दुहाई, गाजियाबाद में फकीर सत्संग भवन का शिलान्यास

१२.३० पर भण्डारा

६-३-१९८९ - दिल्ली से होशियारपुर को प्रस्थान ।

"मनुष्य बनो" (हिन्दी मासिक पत्र) समाचार पत्र (केन्द्रीय) अधिनियम १९५६ नियम ८ फार्म ४ के अनुसार आपेक्षित आवश्यक सूचना

१—प्रकाशन का स्थान		अलीगढ़
२ – प्रकाशन अवधि		मासिक
३ · मुद्रक का नाम		श्रीमती सुधा मीतल
क – राष्ट्रीयता		भारतीय
ख—पता		शिव भवन, लेखराज नगर, अलीगढ़। (उत्तर प्रदेश)
४—प्रकाशक का नाम		श्रीमती सुधा मीतल
राष्ट्रीयता		भारतीय
पता		शिव भवन, लेखराज नगर, अलीगढ़।
५—सम्पादक का नाम	:	श्रीमती सुधा मीतल
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	शिव भवन, लेखराज नगर, अलीगढ़
६—स्वत्वाधिकारी	:	श्रीमती सुधा मीतल
संरक्षक	:	परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज

७—मैं सुधा मीतल घोषित करती हूं कि उपर्युक्त विवरण मेरी जानकारी और विवरण के अनुसार सही है।

सुधा मित्तल

Regd. No. L-ALG. 28

मिलने का पता :
'मनुष्य बनो' कार्यालय
शिव भवन, लेखराज नगर,
अलीगढ़-२०२००१ (उ० प्र०)

अवैतनिक सहायक सम्पादक :
महेशचन्द्र मीतल
सम्पादक, व्यवस्थापक व प्रकाशक :
श्रीमती सुधा मीतल

ग्राहक संख्या— 1925

श्रीमान Sri S. Vithal Rao Teacher
Z.P.P.H.S. Madnoor
mandal - Madnoor
Distt- Nizamabad.
503309

मुद्रक : श्रीमती सुधा मीतल, दातादयाल प्रिंटर्स, लेखराजनगर, अलीगढ़।